तीन कबूतर दो तोते

विजय बहादुर सिंह

तीन कबूतर दो तोते
हम भी काश! वही होते

भरते रोज़ उड़ान नई
परबत और पलई-पलई
बैठ कहीं पर सुस्ताते
सुख की झपकी ले सोते
तीन कबूतर दो तोते
हम भी काश! वही होते

वन-उपवन-मधुवन की ओर
छूकर हम क्षितिजों की छोर
बैठ मुँडेरों पर गाते
रोज़ नए सपने बोते
तीन कबूतर दो तोते
हम भी काश! वही होते

सबसे अच्छा अपना घर

विजय बहादुर सिंह

सबसे अच्छा अपना घर
अपने घर पर है बिस्तर
छाया हरी-भरी इसकी
मीठे-मीठे इसके फर
थकन पोंछ देता सारी
मीठा कोई गीत गाकर

आ जाना चुपचाप यहाँ
थक जाओ तुम कभी अगर
धूप का जंगल एक कुँआ
याद रहेगा जीवन भर

पानी में से

पानी में से
मछली उछलती थी
और वहीं अटक जाती थी।

वहीं अटक जाती थी
बगुले की निगाह भी।
उन्हें देखते हुए
मैं भी अटक जाता था।

– रुस्तम

चित्रः दिलीप चिंचालकर